आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 23-06-2014

बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - अपने लक्ष्य को सदा सामने रखो तो दैवीगुण आते जायेंगे. अब तुम्हें माया से अपनी सम्भाल करनी हैं, आसुरी गुणों को निकाल दैवीगुण धारण करने हैं.

सबसे पहले हमें याद रहें की हमारा लक्ष्य हैं, लक्ष्मी-नारायण जैसा संपूर्ण सतोप्रधान बनना. बाबा हमें बार-बार समझाते हैं की दैवी-देवता हमें सतयुग में बनना हैं लेकिन दैवी-गुण यहाँ धारण करने हैं.

दैवी-गुण स्वयं में धारण करने के लिए तीन मुख्य बातों का पुरुषार्थ हमें अभी करना हैं.

1. अपने मन-वचन-कर्म से किसी को भी दुख नहीं देना हैं. ऐसे ही किसी को दुखी हो देख कर स्वयं को भी दुखी नहीं बना देना हैं. ना किसी को दुखी करना हैं, ना किसी से दुखी होना हैं.

2. सर्व से गुण-ग्राही बनना हैं. हमारे सामने कैसी भी आत्मा आये, लेकिन स्वयं की स्थिति ऐसी हो हमें उस आत्मा के गुण ही दिखाई दें. अगर मेंने किसी भी आत्मा का कोई भी अवगुण देखा, तो वह अवगुण हमारे में आ जायेंगे. इसलिए हमें स्वयं की स्थिति ऐसी बनानी हैं की हमें सदा दूसरों में गुण ही दिखाई दें. सर्व के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखनी ही हैं.

3. हमारे में जो भी अवगुण हैं, उसको पहचान कर, हर रोज़ उसका चार्ट बनाना हैं और देखना हैं की हमारे मेसे वह अवगुण दिन-प्रतिदिन कितना कम होता जाता हैं. हर बार कोई एक अवगुण ही निकाल ने की प्रैक्टिस करनी हैं. जैसे बाबा ने आज बताया की हमें स्वयं की माया से सम्भाल करनी हैं, क्योंकि जैसे हम स्वयं से अवगुण निकालने का पुरुषार्थ करते हैं तो माया भी डबल जोर से वार करती हैं. लेकिन हमारे में प्रबल निश्चय हो की कैसे भी करके मुझे ये अवगुण निकालने ही हैं. तो सफलता जरूर हुई पड़ी हैं.

ॐ शांति.

Please send your feedback to Atma Bhai on email –
a.brahmin.soul@gmail.com www.omshanti.com